

चिकित्सा निर्देश पत्र

परम पूज्य महाराज श्री के द्वारा WELLNESS – YOGGRAM – NIRAMAYAM के सभी वैद्यों को चिकित्सा संबंधी निर्देश दिए गए हैं, जिनका पालन सभी वैद्यों को अनिवार्य रूप से करना है।

● किडनी रोगियों हेतु चिकित्सा निर्देश

1. RENOGRIT २-२-२ वटी दिन में ३ बार खाली पेट देवे। इसके अतिरिक्त अन्य कोई व्याधि हो, जैसे DM, HTN, WEAKNESS आदि से सम्बंधित औषध खाने के बाद ही देवे।
2. किडनी रोगी को कम से कम २ सप्ताह रखें। नजला जुकाम होने पर CREATININE बढ़ता है इसलिए ऐसे रोगियों को नजला जुकाम न हो यह सावधानी रखें।
3. **CKD WITH PROTEINURIA** में
 - a. Renogrit 2-2-2 खाली पेट दिन में 3 बार देवे गोखरू धनिया पानी से
 - b. चंद्रप्रभा वटी 1-1-1 खाने के बाद देवे।
 - c. गोक्षुरादी गुगल 1-1-1 खाने के बाद देवे।
 गिलोय + गोखरू + आमला का काढ़ा देवे।
4. CKD / NEPHROTIC SYNDROME के रोगी को चिकित्सा प्रपत्र लिखते समय NUTRELLA IRON COMPLEX को IRON SUPPLEMENT के तौर पर ना लिखे।
5. KIDNEY रोगियों में RENOGRIT TABLET के साथ नीम पीपल जूस को अनुपान स्वरूप देवे।
6. KIDNEY रोगियों में गोखरू धनिया पानी को औषध के साथ अनुपान में देवे परन्तु RENOGRIT TAB के साथ केवल नीम पीपल जूस ही अनुपान में देवे।
7. ALLOPATHY की किसी अन्य औषध के कारण यदि CREATININE LEVEL बढ़ता है तो अपने चिकित्सीय प्रपत्र में गिलोय घन वटी एडवांस लिखें।
8. किडनी रोगियों को बुखार होने पर आहार चिकित्सा में गिलोय जूस सुबह खाली पेट देवे।
9. RENAL STONES (अश्मरी विकार) होने पर गोखरू + कुलथ की दाल का पानी पिये को देवे।

● लिवर के रोगियों हेतु चिकित्सा निर्देश

10. LIVER DISEASE, ARTHRITIS, OBESITY, CHRONIC CONSTIPATION में गोघन अर्क देना अनिवार्य है।
11. लिवर क असाध्य रोगियों को LIVOGRI JUICE (भूमिआमला, पुनर्नवा, मकोय, एलोवेरा, WHEATGRASS, श्योनाक की छाल) का रस दिन में ३ बार देना है।
12. लिवर के रोगियों को आहार चिकित्सा में अजा दुध कल्प (बकरी के दूध का कल्प) करवाए।
13. Hepatitis व्याधि में LIVOGRI VATI के साथ गोघन अर्क (5-10ML रोगी बल अनुसार) अनुपान स्वरूप देवे।
14. अम्लपित्त, gastric problem, hyperacidity आदि में ACIDOGRI TAB की जगह LIVOGRI TAB ही देवे।
15. पाचन सम्बंधित विकार में बकरी के दूध पर उपवास चिकित्सा देवे।
16. ग्रहणी विकार में बकरी के दूध की छाछ एवं दही का प्रयोग करे। बकरी के दूध की बस्ति चिकित्सा भी करे।

● कैंसर (कर्क रोग) रोगियों हेतु चिकित्सा निर्देश

17. CYSTOGRI DIAMOND आदि कोई औषध गर्मी करें तो औषध के साथ लौकी + खीरा + टमाटर का juice या aloe vera juice अनुपान में देवे। आर्थराइटिस के रोगी को CANCER होने पर लौकी खीरा टमाटर का रस अनुपान में न दे कर केवल एलोवेरा का रस या सौंफ धनिया पानी अनुपान में देवे।
18. Carcinoma of lungs में खांसी होने पर निम्न योग का प्रयोग करें
अभ्रक भस्म सहस्रपूटी 5 gm, संजीवनी वटी 20 gm, मोती पिष्टि 5 gm, प्रवाल पञ्चाग्न 10 gm
सभी को मिलाकर 40 पुड़िया बनाए, 1-1 पुड़िया सुबह शाम खाली पेट शहद से लेना है।
19. stomach कैंसर / पेट के रोगी / लिवर के रोगियों को सुबह-दही + ११ पत्ते तुलसी, दोपहर-छाछ + ११ पत्ते तुलसी, रात्रि में दूध देवे।
20. BLOOD CANCER में भी CYSTOGRI DIAMOND TAB का प्रयोग करें।
21. कैंसर व्याधि, CHRONIC ASTHMA में AUROGRIT TAB १-१-१ खाली पेट देवे। सभी प्रकार के LUNG CA, BREAST CA, CA, BLOOD CA, CERVIX CA में AUROGRIT TABLET देना अनिवार्य है।

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः

● उपवास चिकित्सा हेतु निर्देश

22. असाध्य रोगियों को ३-५ दिन का उपवास करवाना अनिवार्य है।
23. कुपोषण में फल पर उपवास करवाना अनिवार्य है।
24. सभी वात रोगियों को मेथी पानी / सौंफ मेथी पानी पर उपवास करवाना है। कम से कम ३ से ५ दिन उपवास करवाना अनिवार्य है।
25. पित्त रोगियों को सौंफ का पानी या धनिया पानी या पित्तहर पानी या सेब पर उपवास करवाना अनिवार्य है।
26. कफ रोगियों को खजूर कल्प करवाना अनिवार्य है।
27. आहार चिकित्सा में दिन में रोगानुसार रोगियों को ३ बार ताजा रस देना है।
28. सभी वात एवं कफ रोगियों को कम से कम ५ दिन उपवास चिकित्सा करें।
29. उपवास चिकित्सा में पहले ३ दिन पूर्णतया रसोपवास पर रखे। ३ दिन बाद रोगानुसार योग्य रोगी को ऊंटनी / बकरी के दूध पर कल्प चिकित्सा करें।

● बन्ध्यत्व हेतु चिकित्सा निर्देश

30. INFERTILITY , अत्यार्तव , अति रक्त प्रवृत्ति होने पर यज्ञ की भस्म का पानी पिलाएं।
31. यज्ञ भस्म का पानी बनाने की विधि : यज्ञ भस्म को सर्वप्रथम छलनी या कपड़े से अच्छे से छान ले। १ चुटकी यज्ञ भस्म १ गिलास पानी में रातभर भिगो कर रखें सुबह उठकर खाली पेट पिएं।
32. male infertility में यौवनामृत की ४-४-४ वटी दिन में ३ बार देवे।

● षट्कर्म हेतु चिकित्सा निर्देश

33. षट्कर्म में जलनेति , सूत्रनेति , EYEWASH अनिवार्य है एवं सभी योग्य रोगियों को सुबह एनीमा देना अनिवार्य है।
34. सभी रोगानुसार योग्य रोगी को शंख प्रक्षालन / COLON HYDROTHERAPY करवाना अनिवार्य है।
35. बहुत अधिक खुजली होने पर योग्य रोगी को COLON HYDROTHERAPY चिकित्सा करवाएं।
36. प्रथम तीन दिन में ENEMA , शंख प्रक्षालन , COLON HYDROTHERAPY चिकित्सा देने के बाद पंचकर्म चिकित्सा को विधिवत दे।

● रस चिकित्सा में निर्देश

37. LOW PLATELET में PLATOGRITJUICE (एलोवेरा, व्हीटग्रास, गिलोय, अनार, चुकुन्दर, पपीते के पत्ते का रस) दिन में ३ बार देना है।
38. LOW HAEMOGLOBIN में HAEM JUICE (गाजर, चुकुन्दर, एलोवेरा, व्हीटग्रास, गिलोय का रस) दे।
39. दृष्टि दौर्बल्य में EYEGRIT JUICE (ताजा आंवला, गाजर, चुकुन्दर, एलोवेरा, गिलोय, पालक का रस दे।
40. त्वचा विकार में SKIN JUICE (गाजर, एलोवेरा, लौकी का रस) दे एवं गोधन अर्क के साथ 25ML नीम का रस मिलाकर देवे।
41. sickle cell anemia में भूमिआमला, पुनर्नवा, मकोय, एलोवेरा , WHEATGRASS, गिलोय, श्योनाक की छाल) का रस देवे।
42. पाचन तंत्र कमजोर होने पर या indigestion होने पर भूमि आमला, पुनर्नवा का रस देना है।
43. सभी वात रोगियों को एवं दर्द में PEEDANIL JUICE (गिलोय,सहजन, निर्गुण्डी, एलोवेरा, पारिजात) देवे।

● त्वक विकार में चिकित्सीय निर्देश

44. त्वचा विकार , श्वित्र (VITILIGO) में गोमूत्र के साथ नीम पत्र का लेप देवे।
45. रोगानुसार सभी रोगियों को उचित लेप अदि लिखे जाएं।

● LUNGS के रोगियों हेतु चिकित्सा निर्देश

46. Tuberculosis के रोगी की allopathy की दवा बंद नहीं की जाए।
47. Tuberculosis का संशय होने पर अथवा Tuberculosis व्याधि होने पर TBNIL TAB चिकित्सा में लिखी जाये।
48. बुखार खांसी नजला जुकाम सिरदर्द जैसी बीमारियों में पंचकर्म एवं निसर्गोपचार की चिकित्सा बंद नहीं करे अपितु अवस्थानुसार यथासंभव चिकित्सा करे।
49. रोगी को नजला-जुकाम होने पर ज्योतिषमति तेल अथवा अणु तेल से नस्य करना है।



50. lungs के critical रोगियों में swasari gold के साथ निम्नोक्त योग १/२-१/२ चम्मच सुबह शाम खाली पेट शहद से देवे।
 सितोपलादि चूर्ण 20gm
 त्रिकटु चूर्ण 20gm
 स्वर्णवसंतमालती 5gm
 अभ्रक भस्म सहस्रपुटी 10gm
 श्वसारी भस्म 10gm

51. स्वरभेद, वाकग्रह, कफ रोग में BRONCHOM TAB २ गोली दिन में ३-४ बार चूसने के लिए देवे।

● आहार सम्बंधित चिकित्सा निर्देश

52. हृदय रोगी, HTN , DYSLIPIDEMIA , CANCER , DIABETES , चर्मरोगी , स्थूल्य (OBESITY)/ DETOX DIET अनाज, नमक, मीठा नहीं देना है।
53. ARTHRITIS में PEEDANIL जूस, ATM सब्जी , ऊंटनी का दूध , खजूर रोगी को देना अनिवार्य है
54. DIABETES व्याधि की आहार चिकित्सा में
 अनाज पूर्णतया बंद करें ,
 खीरा, करेला , टमाटर , आंवला, एलोवेरा , गिलोय , तुलसी का रस देवे।
 मैथी का पानी पिने को देवे।
 अंकुरित मैथी देवे।
 आंवला, एलोवेरा , गिलोय, मैथी , सदाबहार , चिरायता , विजयसार , गुड़मार का पेय दिन में ३ बार पिने को देवे।
 TYPE -१ diabetes और ARTHRITIS में ऊंटनी का दूध देवे।
55. जो भी स्वस्थ साधक इन्सुलिन या steroids ले रहे हैं उनकी औषधियों की खुराक धीरे-धीरे उनकी अवस्था के अनुसार कम करे।
56. FILARIA की चिकित्सा मे

- पुनर्नवादी मंडूर 1-1-1 खाली पेट
- Weight go 1-1-1 खाली पेट
- कैशोर गूल 1-1-1 खाने के बाद
- मेदोहर वटी 1-1-1 खाने के बाद

इसके साथ 1-2 दवा लाक्षणिक आधार पर देवे।

● सामान्य चिकित्सा निर्देश

57. कफ रोगियों को दवा गर्मी करे तो मुलेठी के पानी से दवा देवे।
58. सभी आदरणीय वैद्यगण ध्यान रखे चिकित्सा के समय महिला रोगियों को मासिक धर्म आने पर चिकित्सा करने से मना नहीं करें अपितु यथासंभव चिकित्सा करे। कटी स्नान, Jacuzzi, immersion bath, 3 in one, Spinal spray, Full body massage, अभ्यंग, उद्धर्तन, षष्टिक शालीपिण्ड स्वेदन , स्नेहधारा, शोधन चिकित्सा, full body treatment, कटी संबंधित चिकित्सा, कुंजल, आभ्यांतर बस्ती आदि चिकित्सा को ना देवे (कटी बस्ती / कटी पीचू को छोड़कर)। उसके अतिरिक्त रोगी की सभी चिकित्सा (acupressure, acupuncture, physiotherapy आदि भी) यथावत चलने देवे।
59. CKD, TUBERCULOSIS, CANCER के रोगी को चिकित्सा देने से मना नहीं किया जाए। रोगी की हालत नाजुक होने पर भी consent ले कर रोगी को भर्ती किया जाए। Tuberculosis के रोगी की Alopathy की दवा बंद नहीं की जाए।
60. स्थूल्य व्याधि में अश्वगंधा के ५-१० पत्ते उबालकर दे।
61. ऋतू अनुकूल होने पर मिट्टी चिकित्सा सर्वाधिक देना है।
62. रक्तगत वात, मधुमेह, थायराइड, कोलेस्ट्रॉल की एलोपैथी औषधि पहले दिन से बन्द करके उसकी स्थान पर अपना आयुर्वेद की औषधियों को परामर्श दें।
63. मयूरपिच्छ भस्म + पिपली चूर्ण + मोती पिष्टी बराबर मात्रा में हिचकी के उपचार के लिये दें ॥
64. CT/ BT/ HIV/ HB/ HBsAG का परीक्षण रोगी के भर्ती होने पर पहले दिन ही करवाना अनिवार्य है।

NOTE: आयुर्वेदिक चिकित्सक द्वारा औषध प्रपत्र एवं प्राकृतिक चिकित्सक द्वारा आहार प्रपत्र में त्रुटि होने पर, उत्तरदायी चिकित्सक द्वारा प्रति प्रपत्र १००/- दंड शुल्क देय होगा।